M·A·Sem = II Paper – CC-5

महाकाव्य – गउडवहो

01

Ques – I वाक्पतिराज के व्यक्तित्व एवं काल पर प्रकाश डालें।

Ans – जीवन-परिचय – सुभाषितावली में वल्लभदेव ने उल्लेख किया है कि वाक्पतिराज हर्षदेव के पुत्र और यशोवर्मा के दरबार के कवि तथा गउडवहो के रचयिता थे। ये योगेश्वर नाम के द्वारा भी प्रशंसित किए गये थे जो पाल-दरबार के कवि थे। जैन सूत्रों के आधार पर भी बप्पभट्टिसूरि-चरित में कवि का उल्लेख मिलता है। राजतरंगिणी में वाक्पति राज को कवि और क्षत्रीय राजकुमार के रूप में तथा सोड्ढल की उदयसुन्दरीकथा में कवि को किसी सामन्त परिवार में जन्म लेने का उल्लेख मिलता है। यशस्तिलक चम्पू में वाक्पति राज का उल्लेख यशोवर्मा के बंदी के रूप में किया गया है।

काल निर्धारण → ~~कल्हण की रराजतरंगिणी~~

→ कल्हण की राजतरंगिणी में वाक्पति-राज का नाम भवभूति के साथ लिया गया है। राजतंगिणी (4) 134 में कल्हण ने बतलाया है कि कश्मीर के राजा ललितादित्य मुक्तापीड़ ने कन्नौज के राजा-यशोवर्मा को परास्त किया था इसके आधार पर डॉ० ~~स्टीन~~ स्टीन का मत है कि यह घटना सन 736 ई० के पूर्व की नहीं हो सकती। वाक्पतिराज ने अपने इस काव्य में यशोवर्मा का यशोगान किया है।

दुर्गाप्रसाद द्विवेदी ने टिप्पणी करते हुए इनका समय ई० सन् 7वी शती का उत्तरार्द्ध निर्धारित किया है गउडवहो की 826 गाथा में सूर्य ग्रहण का संकेत मिलता है। डॉ० हर्मन जेकोबी इस सूर्य

ग्रहण का 14 अगस्त 733 ई० निश्चित किया है इसलिए गउडवहो की रचना इसी समय हुई होगी इसी से आचार्य बलदेव उपाध्याय गउडवहो की रचना और वाकपतिराज का समय ई० स० की 8वीं सदी प्रवृद्धि मानते हैं।

तेजस्वी व्यक्तित्व → कवि ने स्वयं अपने काव्य गउडवहो में भी यत्र-तत्र अपने विषय में निम्न लिखित बाते कही है। उस राजा ने जिसकी स्तम्भ सदृश्य भुजाओं पर सम्पूर्ण विश्व का भार टिका है। वाकपतिराज को कविराज की पदवी से अलंकृत किया जबकि यह कवि उसकी कृपा से मात्र बंदी ही था।

यशोवर्मा ही ऐसा व्यक्ति है, जिसकी कीर्ति और सद्गुण सुनने योग्य है। कवि ने यशोवर्मा को विष्णु के अवतार रूप में चित्रित किया है।

वाकपतिराज प्रतिभाशाली लोकप्रिय कवि है। संस्कृत के काव्यों से पूर्णयत प्रभावित है। ऋतु वर्णन और प्रकृति चित्रण पर संस्कृत काव्यों का पूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। यह-

न्यायशास्त्र, छन्दशास्त्र और पुराण आदि विषयों का ज्ञाता था।

कवि आत्म प्रशंसा करते हुए कहता है कि श्रोता गण उसके उच्चतर काव्य प्रतिभा प्रदर्शन की आशा करते है किन्तु सहसा उसका काव्य चमत्कार देखकर दंग रह जाते है और जो कुछ श्रवन किया उसे स्मृति में स्थापित कर रखते हैं। लोग इसे कवि से विद्वगण तथा

ज्ञानियों की उपस्थिति में राजा सभा में विस्तारित तथा विभिन्न श्रोतों से महाराज यशोवर्मा के समक्ष बोलने का आग्रह करते हैं।

अतः वाक्पतिराज के संबंध में ऐसा प्रतीत होता है कि गउडवहो में उन्होंने अपनी विद्वता के माध्यम से जन-मानस में जीवन का संदेश देने का प्रयत्न किया है।